10-7-67 ओम शान्ति: रात्री क्लास

बच्चे और बच्चियाँ कहते है कि हम तोल-न बनेंगे। गोया सभी गुलाब के फूल बनेंगे। जो मुख से कहीं
जाता है तो वैसा पुरुषार्थ भी करना होता है। सभी को बताना है कि ऊंच ते ऊंच शिव बाबा है। भगवानोवाच
है कि मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप विनाश होंगे। यह पैगाम सभी को देना है। पतित पावन बाप है उनको
ही सभी बुलाते हैं। वो बाप है उनके तुम बच्चे हो। बच्चे तो जरूर साथ मे ही रहते है। पावन बाप के
साथ पावन बच्चे ही रहते है। रावण राज्य मे पतित बने है। भक्ति मे मनुष्य अनेक प्रकार के नाच नचते है। अब
दीपमाला आती है। व्यापारियों को तकलीफ होगी। वो लक्ष्मी की पुजा करते है ब्राह्मणों को बुला कर। सफाई
करवाते है बाबा के पास व्यापारी तो बहुत ही आते है। ख्याल करते होंगे, ब्राह्मण को बुलाना होगा। लक्ष्मी की
पुजा करनी होगी। हम तो खुद भी "ब्राह्मण है जो कि देवता बन रहे है और वो शुद्र। तो उस हालत
मे क्या करना चाहिये? व्यापारी चौपडा रखने वाले तो सभी होंगे। धन वृधी को नही मानना है। यह सभी तो
तिकतान है। यह तो है रस्म-रिवाज। बच्चे तो मूंझेंगे कि क्या करें? बाबा कहेंगे कि वो सब भल करो।
किसीको भी राजी करने लिये थोडी बहुत पुजा कर लेनी चाहिये। बोलो अब हम पुज्य बन रहे है। ऊंच ते
ऊंच भगवान सबका पुज्य एक ही है। सभी पुजारी उनको याद करते है। पुज्य देवताय याद नही करते है।
उनको तो बाप ने पुज्य बनाया नां। तो किसीको राजी करना पड़ता है। अगर भक्ति छोड़ देंगे तो हल-चल
मच जोवगी। ज्ञान मार्ग मे फिर युक्तियें चरित्र बहुत चाहियें। पाप तो नही है नां। कृष्ण आद को पुजना
पुजना पाप नही है। पाप तो है गाली देना। बाकी तो पुजा करना लक्ष्मी का आवाहन आद करना पुजा
नही है। दुकान थे तो जरूर ही करनी पडे। नही तो सभी क्या कहेंगे। कल तो पुजा करते थे आज नही
करते है। इसलिये बाबा बता देते है कि करनी चाहिये। तो किसीको ख्याल नही आवे। याद फिर भी
शिव बाबा को ही करना है। परन्तु औरों को दिखाने लिये मुह हिला देना है। उसमे पाप नही है। ईश्वर
को सर्वव्यापी मानना बडा पाप है। अभी तुम बच्चे समझते हो कि हमारी तो बेसमझ बुधी थी जो कि यह
सभी करते थे। अभी तो अविनाशी रत्नो का व्यापारी मिला है तब क्या करें। बाप तो इनमे बैठ कर सर्विस
करते थे। सभी को थोडे ही छोडना है। इनको तो निमत बनना ही था। तो धन्धे आद से दिल हट गई।
तुम बच्चो को तो हटानी नही है। पैसे कमा कर फिर इस सर्विस मे लगाने पर पाई भी अशर्फी बन जावे।
सैन्टर्स खोलेंगे उसमे फिर सर्विस करेंगे तो उसमे पैसे तो चाहिये ही होते है नां। पैसो ही से सर्विस करेंगे।
कभी भी कोई बात हो तो फट से पूछो। कहीं पर पार्टी मे जाना है, वहां अगर कहते हो कि हम
दूसरे के हाथ की नही खाते है। तो वो फील करते है। कहते है कि हम कोई खराब है क्या। हम म
मेहतर है क्या। तो कोई भी बात सामने आती है तो पूछनी चाहिये। आजकल तो रिशवत भी बहुत
चलती है। नमस्कार सो लाइनवाले बांटकर लेते है। फिर अगर कोई नही लेवे तो नौकरी ही से छुड़वा
दे। हर एक बच्चे को कोई भी आफत आ जावे तो पूछ सकते है। पतित से पावन बनने की हमको राय
दो। तुम बच्चे जानते हो कि हम पुर्नजन्म लेते गंगा स्नान करते आये है। बहुत गपोडे लगाते है कि हम
इनको ले जाते है हम थोडे ही स्नान करते है। हम तो इनकी सेवा करते है। गंगा जल का बहुत प्रभाव दिखाते
है। मनुष्य पीने लिये सब देते है। विलायत मे भी बहुत साथ मे ले जाते है। तुम बच्चो को तो सभी
खिटपिटो से बिलकुल ही छुडवा दिया है। बाप कहते है कि कुछ भी नही करना है। तो भी युक्ति
से चलना है। कृष्ण की भक्ति करने, करो? अच्छा जी करता हूं। राज़ू बिमज बाज बनना होता है। कोई भी
बात ध्यान मे हो तो पूछ सकते हो। मूझते हो तो बाबा बता सकते है। पूछो कहीं पर पाप नही हो जाये
बाबा तो बैठे ही है। कोई 2 ब्राह्मणी कहती है कि मेरे पूछे बिना दिखवाने बिना चीज वा पत्र नही भेजो
नहीं-नही यह तो कहना का हक ही नही है। हर एक को हक है। बाबा को पता ही कैसे पडे कि टीचर
ठीक पढाते है वा नही। ठडी उठते है वा नही। बाबा को लिख देना चाहिये हमारी ब्राह्मणी ऐसा

हमारी ब्राह्मणी हमको कहती है कि सवेरे में उठो याद करो और खुद तो देरी से उठती है। जांच भी करनी चाहिये कि किस समय उठती है। कुकड़ज्ञानी तो नही है। इसलिये कोई को भी हक है समाचार देने का। हमारी ब्राह्मणी कहीं पर नवाबी से तो नही चलती है। सेहत ठीक है तो सब कुछ हाथ से करना चाहिये। ऐसे नही है कि ब्राह्मणी रानी होकर बैठे। सर्विस नही लेनी है। बिमार है तो दुसरी बात है। नही तो आदत पड जायेगी। चाह ले आओ, रोटी ले आओ। नवाब ही बन जाती है। बाबा कितनी निर्मानता से चलते है। उछल से गुस्सा नही, बहुत मीठा बनना है। जो कि किसीको दुःख न हो। सभी सम्पूर्ण तो नही बने है नां। समझानी देनी चाहिये। जैसा कर्म वो करेंगे फिर वैसा ही दुसरे भी करेंगे। फिर नवाब बन जाती है। यहाँ आते है तो बाबा हल्का करते है। निरअहंकारी होकर रहना है। निराकार आते जरूर है शरीर में। वहाँ ही दिखाते है कि मै निरअंहकारी हूं नही कहे कि तुम पतितों के पास आने की मुझे क्या दरकार है। तुम बच्चों को नम्रता मे बहुत रहना है। क्रोध जो करते है उनका रजिस्टर मे खाता खराब होजाता है। जांच करनी चाहिये। माया बहुत चक्र मे ले आती है। स्वर्ग मे तो पुण्यात्मायें ही होती हैं। यह है पापात्माओं की दुनियाँ। वो तो है पुण्यात्माओं की दुनियां। कृष्ण को महात्मा भी कहते है। परन्तु यहाँ के महात्मायें सब है झूठे2 यहाँ सब है पापात्मायें महान कोई को नही सकते है। आत्मा को महानात्मा कह कैसे सकते है। एक गीत भी बनाया था कि साधु अघर देमाना... बाप से ही बेमुख कर देते है। अपनी पुजा करवाने वाले को हरणाकश्यप कहा जाता है। चरणामृत बैठ कर उनका पीते है। कहाँ पर तो देवताओं का चरणामृत कहाँ फिर मनुष्यों का। बाप ही आकर सब समझाते हैं। रावण राज्य में तुम्हारा कर्म विकर्म हो जाता है। फिर आधा कल्प मे तुम सुखधाम का मालिक बन जाते हो। प्रदर्शनी आद मे जो इतना खर्चा होता है प्रजा ढेर बन जायेगी। अब भी विचार करो कि कितनी प्रजा बननी है। 卐

11-7-67:-:रात्री क्लास:-:- बच्चे अथवा बच्चियां। बाप तो कहेंगे बच्चे। और यह आलौकिक बाप कहेंगे बच्चे अथवा बच्चियां। छोटे-2 बच्चे भी समझते है कि भगवान पढाते है। कहां तो भगवान पढावे कहाँ पर यह मनुष्य। बाप ने समझाया है कि देवी देवताओं को भगवान नही कहेंगे। कई तो भगवान भगवती भी कहते है। परन्तु वो तो है देवी देवता। उनको श्रेष्ट बनाने वाला ऊंच ते ऊंच भगवान निराकार है। ऐसे नही कि किसी देवता ने इनको बनाया है। नही। भगवानोवाच्य है। देवी देवता वाच्य नही है। यह सभी नई दुनियाँ के लिये नई बाते नई ही पढाई है। शास्त्रो मे तो झूठी ही बाते लिख दी है। इस समय अन्तिम जन्म सांवरा है नां। बाप कहते है कि हम तुमको बिलकुल ही प्योअर देवता बनाते है। बच्चे भी जानते है कि यहाँ पर भगवान पढाते है विश्व का मालिक बनने लिये। वहाँ पर शैतान पढाते है। अब बाप पूछते है कि विश्व का महाराजा महरानी बनना अच्छा वा वो जिस्मानी पढाई अच्छी है? कहते है कि परिक्षा पास करके फिर इस पढाई मे लगेंगे। अरे अगर मर जाओ तो? बुधी से काम लिया जाता है नां समय बहुत थोडा है। मरने पहले पढाई पढना अच्छा है। योग से तुम बच्चो की आयु बड़ी होती है। आयु बडी होती है इसयाद की यात्रा से। भविष्य मे बडी आयु वाले तुम बनते हो। सतोप्रधान भारत था तो बडी आयु वाले थे। तुम जानते हो कि हम बडी आयु वाले बन रहे है। यह पढाई शुरू कर देनी चाहिये बेहद का बाप तो सिर्फ कहते है कि मुझे याद करो। इस पढाई का नशा चढ गया तो बहुत अच्छा है। जो-2 अच्छी कुमारियां निकलेगी उन को सर्विस मे लगा देंगे। बाकी जो अच्छी नही होगी तो रिस्तेदारो पास भे देंगे। हर बात मे सब कुछ सिखावेंगे। अंग्रेजी आद भी सिखावेंगे। बच्चो मे मोह की रग नही रहनी चा तुम बच्चे बाप की याद मे रहते हुये इस दुनियां को भूल जाते हो। आग तो लगनी ही है नां। वि होना ही है। विनाश कौन करते है? शंकर काहे को किसीको मारते है। मारना तो पाप है नां। शंकर मे क्रोध है? नहीं। फिर उनको देवता कैसे कह सकते है। शिव बाबा शंकर दवारा विनाश करवाते है।

यह ऊंह रांग है। किसीको कहना कि मारो तो उस पर भी दोष आ जाता है। मै ऐसा थोडेई कहूंगा कि मारो। बाबा कहते है कि प्रेरणा अर्थात विचार। बाकी प्रेरणा आद की तो बात ही नही रही नांही मैं कहता हूं कि मारो। यह तो ड्रामा का ही हुआ है। आपसमे भाई-लडते रहते है। वो आसुरी मत है नां। अब तुम जानते हो कि वो आपस मे लडते रहते है। मारवन तुमको मिलता है। सारे विश्व का मालिक बनते हो। बादशाही का मारवन तुमको मिलता है। यह ड्रामा में ही नूंध है। ऐसा नही कि ईश्वर ही वो सब करते है। फिर जो भी अच्छा वा बुरा कर्म करता है वो भी ड्रामा मे ही नूंध है। तो ही मै जनीजाननहार हूं। यह भी अन्धविश्वास है। सन्यासियों में भी तो अन्धविश्वास है नां। बिना विश्वास तो वास्तव में पढ भी नही सकते। विश्वास है तो ही पढते है। बाप का वर्सा वो उतना ही पावेगा जितना जो पुरुषार्थ करेगा। पुरुषार्थ तुम बच्चों को बहुत-बहुत करना है। उसमे भी मुख्य तो है याद की यात्रा। यह सर्विस आप- हैल्थ है। तुम परमात्मा प्रिय बनेंगें तो हैल्थ भी अच्छी हो जावेगी। बाप कहते है कि अब पवित्र पुरा होता है। घर जाकर फिर सुखधाम मे आवेंगें। यह है दुखधाम। सतयुग की महारानी बनना है वो मशीन की सिलाई और कपडो कीसिलाईआद करना है? बुधी योग लगा कर भल वो पढाई आद भी पढो। बस राय देते है कि क्या अगर होशियार है, तो सेन्टर खोलो। चित्र सामने रख देने है। बहुत टापिक्स है जो बोर्ड पर लिख सकते हो। फिर आते ही रहेंगें। समय लिखना होता है फलाने से फलाने तक। मुख्य समय तो है सवेरे और शाम का। अपना दुकान आद भी सम्भालना है। कोइआवे। दिन मे भी सर्विस करनी पडे। सोना नही है। गवर्मेन्ट के सरवेन्टस सोते नही है। कमाई होती है नां। तुम भी कमाई करते हो। जागते रहोगें तो भगतये आद भी आवेगी। तुम्हारे लिये जागना जरुरी है। जिन जागा तिन पाया जिन सोया तिन खोया। तुम बच्चो की तो सारादिन ही सर्विस है। कोई ब्राह्मणी यह भी कहती होगी कि दिन के समय में नही आओ। क्योंकि बु, कु, सोती है नां। वास्तव मे सोना ठीक नही है। अभी जो रुहानी म्यूजियम का प्रबंध हो रहा है उसमे तो सोने की फुरसत ही नही मिलेगी। आते ही रहेंगें। आगे चल कर इतनी सर्विस शुरु हो जावेगी जो कि नींद करने का समय हि नही मिलेगा। फिर आदत को मिटाने लिये मेहनत करनी पडेगी। जिन सोया तिन खोया। यह गायन भी इस समय का ही है। तुमको सर्विस करनी है तो टापिक्स भी निकालनी चाहिये। बाप को बहुत प्रेम से याद करना है। बाबा वो ऐसे भी नही है कि बैठ कर ही याद करना है। घूमते फिरते पैदल करते भी याद मे रहना है। काम करते दिल यार की तरफ ही रहे। याद मे रहने से जवर धरेगा? याद ही बहुत मुख्यहै। उसमे ही तुम ठण्डे हो। आधा कल्प के पाप सिर पर है जो कि काटने है। बाप कहते है कि काम महाशत्रु है। सम्पूर्ण बनना है। ओम

12-7-67:-:-रात्रीक्लास :-:-लडाई के मैदानमे मनुष्य को खबरदार बहुत रहना पड़ता है। सूक्ष्म हो वा स्थूल हो। बाबा ने समझायाहै कि तुम्हारी लडाई है साईस से। साईलेन्स और साईस। साईस से विनाश और साईलेन्स से स्थापना होती है। तुम गुप्त सेना हो नां। हर एक बाने को आत्मा समझो। देही अभिमानी जातपात का अभिमान भी निकल जाता है। कोई भी धर्म कोई भीजात वाला हो वो भेद नही रह सकता है। देह का अभिमान छोड कर अपने को आत्मा समझना है। जबकि बेहद के बाप की तुम बेहद की ही ईश्वरिय सन्तान हो तो तुमको शुध अंहकार होना चाहियेकि हम ईश्वर की सन्तान है। ईश्वरिय कुल के भी तो ब्राह्मण कुल के भी हो। जबकि ब्राह्मण कुल के हो तो दूसरे जातपात का भेद नही रहता है। यहां तो, हर प्रकारके बच्चे आते है। कोई गरीब कोई साहुकार अच्छी-2 पोजिशन वाले भीआते है। बाबा क को तो सम्भाल से चलाना होता है नां। तुम्हारे सुख के लिये मददगार बनते है। शिव बाबा पास देते है शिव बाबा तुम बच्चो केकाम मे लगाते है। मकान आद बनवाते है। समझो कि जिसने मकान बनवाया है तो वो आता है तो जरुर उस को वैसी ही जगह पर रखना पडेगा। दूसरे कोई से बदली करवाना—

पडेगा नां। इस मे फिर खयाल नही आना चाहिये कि शाहुकारों का मान रखते है। कब-2 तो बिगड भी
पडते है। बाबा तो समझते है कि ऐसे खयाल कब नही करना चाहिये। बाबा जानते है कि किनसे बच्चों
के लिये कैसे काम निकलना है। बाप है नां। यह भी जानते हो कि घर मे सन्यासी को वां बडे आदमी
को मंगावेंगें, तो उनकी खातरी करेंगें नां। यहां बाप भी रमज-बाज है। बच्चो को कब शंस्य नही आना
चाहिये।चाहिये। श्रीमत हर बात मे कल्याण कारी है। बाबा तो कब कोई को दो तीन हजार की सौगात
भी दे देंगें। कोई को 5-10 की देंगें। बाबा समझते है कियह भारत की सेवा मे मददगार बनेंगें।
बाप है ही भारत के लिय खास। भारत को ही जीवनमुक्ति मे और बाकीयों को मुक्ति मे ले जावेंगें। कहेंगें
बाबा ऐसे क्यो करते हो? भारत में आके उनको स्वर्गवासी बनाते हो हमको क्यो नही बनाते हो। यह
बाप मे कब भी आना नही चाहिये। बाप है ही कल्याण कारी। ऐसे-2 कब खयाल आना नही चाहिये। ब्राह्मणी
भी जानती है कि अच्छे-2 मददगार को आदर जरूर देना है। बच्चों की ही सम्भाल होती है। बहुत बच्चे
आये तो कैसे रहाना पडा। कोई को तो गदे भी देने पडें। कब तो गलीचा आद डाल कर भी टिपटाप
करते है। उन को जो कल्याण हो जावेगा तो बहुतों का कल्याण हो जावेगा। कब शंस्य दिल मे नही लाना
चाहिये। ब्राह्मणियों में भी सभी नम्बरवार है। कोई को पुरूकार देंगें। बहुत प्यार करेंगें। अच्छी सर्विस नां करती
है तो सावधानी देंगें कि तुम्हारी मेरे पास यहरिपोर्ट है। बाबा सबको लिख देते है। ब्राह्मणी का देह-अभिमान
आद कहीं पर भी देखो तो बाबा को पत्र लिख कर भेजो। तो फिर बदली कर देंगें। शिव बाबा के साथ
साथ यह बाबा भी तो अनुभवी है नां। यह भी महमानो की खातरी बहुत अच्छा रीती करते थे। बच्चों से
भी जास्ती करते थे। ऐसे खयाल कब नहि करना किः= भगवान होकर भी एकरीस को नही चलते है? बाबा
~~को तो सब रचना~~ होता है। तुम बच्चे सतोप्रधान बनते हो तोसामग्री भी सारी फर्स्ट क्लास हो जाती
है। यहां क्या है यह दुनियां में कोईभी कुछ जानते नहीं है। भक्ति मार्ग में तो माथाही ठोकते रहते है।
यहां पर वो भी कोई बात नही है। बाप के सिकीलधे बच्चे हो। कब कोई बडा दिन होता है तो पांव
पडा जाता है।वहां पर जो है वो यहां पर नही होता है। यह तो बाप टीचर गुरू भी है। बार-2 तब तोक
नमस्ते ही करते रहना पडे। तुम कहेंगें बाबा नमस्ते तो बाबा भी कहेंगें नमस्ते2। उत्तर तो जरूर ही देना
होता है नां। तुम बच्चे गुप्त हो। ऐवरी थिंक गुप्त हो। शिव बाबा को कोई दाननही देते है। स्वर्ग
में तो जो फिर इतना मिलता है तो वो लेनाहुआ वा देनाहुआ?। भक्ति मार्ग में ईश्वर अर्थ करने आते थे
तो ईश्वर बहुत थोडा देते थे। अब तो देते है 21जन्मो के लिये। बाप गरीबनिवाज है नां। लेंगें फिर
दो क्या।वो तो भारत को शाहुकार बनाते है फिर क्या, बात ही मत पूछो। यह भी तुम समझते हो।
बेहद का बाप आते है आकर स्वर्ग बनाते है। स्वर्ग यहां भारत मे ही था। बाप ने बनाया था। सीढी पर
समझाना बहुत सहज है। बच्चो को कब भी एक दो मे खयाल नही आना चाहिये। ब्राह्मणी भी ढंग से
चलती है। समय-2 पर खातरी करते हैतो फिर दिल मे नही आना चाहिये।भूल चूक से अगर कोई कुछ
कह भी देती है तो एक कान से सुन कर दुसरे से निकल देना होता है। जिसेस तुमको दुःख फील हो
वो सुन कर निकाल देना चाहिये। सहनशील बनना चाहिये। हम तो जाते है अप ने सुखधाम में। सहनशील
भी गुण है। ज्ञान मार्ग में तो अपनीही मस्ती मे रहना चाहिये। हम तो वहां परजाते है जहां कि दुःख
की बात ही नही। मेरा बन कर अगर फिर पाप किया तो सौ गुना दण्ड हो जावेगा। रोना आदमी नही है।
कोई मर गया तो क्या दुसरा जाकर शरीर लेगा। फिर उनको क्या याद करना। मनुष्य का शरीर कोई
काम मे नही आता है। जनावरो की तो हडिउयां भी काम मे आती है। मनुष्य का मर्तबा तो सिर्फ जीते
जी ही है। देवताये भी पुजे जाते है तो आत्माये भी। मगर मै तो सिंगल पुज्य हूं। कितनी अच्छी-2 बाते
है। कब भी दुसरा सिवाय बाप के समझा नही सके। विदाई